1. Diya Thakur
2. Sneh Thakur
3. Shalu
4. Rohani
5. Manisha

1. Above mentioned students submitted information regarding Village Bayla, their tradition of making "Rot" after harvesting of wheat crop which they offer to their lord "Gada". It is believe that this tradition brings health and prosperity to the villagers and animals living there.
2. Village Gehlu, they have a "Peepal Tree" which is around 200 years old. It has a "Shiv Temple" also. It is believed that when they cut branches of the tree, snakes come out. As they worship Lord Shiva, people believed that these snakes do not harm villagers, as lord Shiva is protected them.
3. Village Behrola, they have acient "Radha- Krishna" ido[l] People prepare khichdi on lohri festival and offer t[o] Lord Krishna. Another belief of this village is that almost 50 years ago whenever there is any function in the village, a mishappening (death) would occur.

About 9-10 years ago the villagers performed some rituals (Gati) at Pahera, Kurukshetra, & Haridwar and also Chanting mantras and hawan in their village help them to get peace.

4. Himachal Lok-Geet :- Behayan, Suhaag, Godhi, Jhuri Geet, ~~Vir~~ Samooh Geet etc. are popular lok-geet of Himachal Pradesh.

5. Badidhar & ~~Badadhar~~ Badadev :- It have been explained that Badader has relation / association with village "Ner". and there is a temple of Badader in the village in which twice in a year complete arrangement of "Langar - Bhandara" provided by the villagers.

6.

14/1

गाँव - गैहलु (Gehlu)

हमारे घर के ऊपर एक 200 साल पुराना पीपल का पेड़ है। ये पेड़ बहुत बड़ा है। यहाँ पर एक शिवलिंग भी है। जहाँ गाँव के सभी लोग हर रोज़ पूजा करते है। यह हमारे पूर्वजों से भी बहुत समय पहले का यहाँ है। जब इस पेड़ की टहनियों को काटा जाए तो यहाँ से साँप बाहर आते है। पर ये साँप ~~बाहर आते है~~। किसी को खाते काटते नहीं है। क्योंकि यहाँ पर शिव जी की पूजा की जाती है। इस पीपल के पेड़ की टहनियाँ घर के ऊपर तक आ जाती है। इसलिए हमें वो काटनी पड़ती है। पर भगवान से माफी माँग लेते है ताकि हमें या घर को किसी तरह का नुकसान न हो।

इस पेड़ की पूजा गाँव के लोग भी करने आते है और किन विशेष पर्व पर पूजा की जाती है

Sneh Thakur

5-6 second में ही कई-कई कि॰मी॰ की दूरी पर हो जाते थे। अब जब से आबादी ~~बढ़ी~~ बढ़ गई और सड़के ज्यादा हुई और गाँव इलाके में भण्डारे, यज्ञ, भगवद कथा, धार्मिक कार्य अधिक होने लगे उसके बाद वे सब (जलदसीरे) लुप्त हो गए।

पुराने समय में लोग ~~इकट्ठे~~ इकट्ठे होकर पशुओं, जानवरों, पक्षियों के लिए पानी पीने के लिए जंगलों में ~~जोहड़ियाँ~~ जोहड़ियाँ खुदवाते थे और सैर वाले दिन सब इकट्ठे होकर ~~रा~~ रास्तों की सफाई करते थे या उनकी रिपेयर करते थे। सब इकट्ठे बैठकर खाना खाते थे। अब ये सारी चीज़े लुप्त होती जा रही है।

प्रथाएं

लोकगीतों का महत्व :-
हमारी संस्कृति में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। इनका हमारे जीवन का बहुत महत्व है।-

लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न है। लोकगीत सीधे जनता का संगीत है। ये घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं।

लोकगीत अपनी संस्कृति का प्रस्तुत करने का एक जरिया है।

लोकगीत लोगों के मन के भावों को प्रकट करने का मार्ग है।

लोकगीतों में मनुष्य मात्र के पारिवारिक और सामाजिक जीवन का सामयिक तथा भावनात्मक चित्रण रहता है।

लोकगीत मनुष्य के स्वभाविक भावनात्मक स्पंदनों से जितना जुड़ा हुआ है। उतना वाणी के किसी रूप में नहीं

लोकगीत में सामूहिक चेतना की पुकार मिलती हैं। इसमें जनता के जीवन का इतना विस्तृत चित्रण होता है। कि उनमें मूल संस्कृति तथा जनजीवन का पूर्ण चित्रण मिल जाता है।

Name - Diya Thakur
Roll.no - 1424

Date: / /20
Page:

गाँव बायला :-

हमारे गाँव में यह प्रथा प्रचलित है कि नई फसल की कटाई के बाद जो अनाज होता है। उस फसल को तब सभी गाँव वाले नया अनाज, गुड और घी को एक बर्तन में ले जाकर रोट बनाने वाले को देते तथा व उसका रोट बनाता है। उसके बन जाने पर सभी उस रोट का भोग गाहा माहराज को लगाते है। और फिर वह रोट सभी वासियों को बांट दिया जाता है। जिसे जानवरो को भी खिलाया जाता है। ताकि सभी स्वस्थ रहे और गजा महाराज का आशीर्वाद उन पर बना रहे। हम गाहा महाराज को यह रोट इसलिए चढ़ाते है कि ताकि वे हमारी फसलो को सभी जानवरो से सुरक्षित रखे और अगले साल फसल और भी अच्छी हो। और गाँव वालो का यह मानना है कि अगर हम नई फसल का रोट बनाकर न चढ़ाए तो फसल अच्छी नहीं होती और जानवर भी फसल को नुकसान पहुंचाते है।

(1) इस मन्दिर की स्थापना कब हुई
(2) इस मन्दिर परिसर में मनाने जाने वाले त्योहार किस माह और किस फसल का आप किस कर रहे है

बंधनों आदि से सम्बंधित है।
हिमाचल प्रदेश के लोकगीत निम्नलिखित हैं।—

i.) **बिहाइयां** :→ हिमाचल प्रदेश में जन्म तथा विवाह सम्बंधी लोकगीत अति प्रसिद्ध हैं। जन्म, नामकरण, मुण्डन आदि, संस्कार के समय गाए जाने वाले गीतों को बिहाइयां कहते हैं।

ii) **सुहाग** :→ कन्या के विवाह के समय गाये जाने वाले लोक को सुहाग कहते हैं।

iii) **घोड़ी** :→ विवाह की रस्म पूरी होने के बाद विदाई गीत जाते हैं। इन रस्मों को कांगड़ा में घोड़ी कहा जाता है। सम्बंधी कुछ अन्य गीतों को सेठनियां भी कहा जाता है

iv) **झुरी गीत** :→ सिरमौर के शृंगार रस से भरे झुरी गीत कोमल भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। झुरी गीत विरह गीत हा

v.) **समूह गीत** :→ किन्नौर और लाहौल - स्पीति के अपने गीत हैं। जिनका अधिकतर रूप समूह गान देखने को मिलता है।

Page No.:
Date:

हिमाचल प्रदेश के मुख्य लोकगीत :-

घोड़ी :-

तेरे संयण तेरी आम्मा करे ओ!
तेरी आम्मा करे।
थामां दी वोरी तेरा बापू परे ओ!
तेरा बापू परे।
तेरे संयण तेरी चाची परे ओ!
तेरी चाची परे।
थामां दी वोरी तेरा चाचा परे ओ!
तेरा चाचा परे!

सुहाग :-

बापू मैनूं लयादे चम्मचे नाले पलेटा चारा ओ! ओ मैं तों बयाणे जाणा सात समंदरा पार ओ नदियां पार मैं तो बयाई के लेआउणी कुला -वांती दे सील नाल ओ!
ओ बापू मैनूं लयादे चम्मचे नाले पलेटा चार ओ

i) सुहाग :-

बाँई रीया बाग बापू वोनो री क्यारी ओ बापू वोनो री क्यारी।
आज दी परोणी काल दी तैयारी वोना! ओ बापू काल दी परोणी।